

हरिभूमि महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहताक, रविवार, 23 नवंबर 2025

12 म्हारी सड़क पोर्टल पर नारनौल शहर की सड़कों...



12 नई सड़क में बांधा बना अतिक्रमण जैसीबी से...



खबर संक्षेप

सड़क हादसे में व्यक्ति की मौत
नारनौल। सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक गाड़ी ठीक करने का काम करता था। जिसके बेटे का भी कुछ दिन पहले एक्सीडेंट हुआ था। जिसके बाद से वह शहर के एक निजी अस्पताल में भर्ती है। पुलिस को दो गई शिकायत में मृतक के बड़े भाई नरेश कुमार ने बताया कि करीब 37 वर्षीय उसका छोटा भाई बबलू गाड़ियों को ठीक करने का काम करता था। उसके तीन लड़के हैं। जिसमें से एक लड़के साहिल का एक्सीडेंट हो गया था। जिससे उसके पैर में चोट लगी थी। भाई 13 नवंबर को अपने बेटे के पास अस्पताल में था। इसके बाद वह बाइक पर सवार होकर घर आ रहा था। जब वह गांव हमीदपुर के पास पहुंचा तो सामने से आ रही तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी। इस हादसे में बबलू गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजन उसको उपचार के लिए पीजीआईएमएस रोहताक लेकर गए। जहां पर 21 नवंबर को इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

अटेली में आज राव नरेंद्र कार्यकर्ताओं से मिलेंगे
मंडी अटेली। हरियाणा कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह 23 नवंबर को अटेली में कांग्रेस कार्यकर्ताओं से रुबरु होंगे। कांग्रेसी नेता महेंद्र सिंह राता ने बताया कि राव नरेंद्र सिंह उनके ऑफिस पर दोपहर 12 बजे वोट चोर गद्दी छोड़ कार्यक्रम को कार्यकर्ताओं से बातचीत कर रूपरेखा तैयार करेंगे। 27 नवंबर को नारनौल में होने वाले कार्यक्रम को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल है। इस कार्यक्रम में हजारों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता इकट्ठा होकर वोट चोर गद्दी का हिस्सा बनेंगे।

नारनौल अनाज मंडी में 12270 किसानों ने बेचा 346089 क्विंटल बाजरा

जोरदार मानसून के चलते इस बार रिकॉर्ड तोड़ रही मंडियों में बाजरे की आवक

पिछले वर्ष 2024-25 में महज 190631 क्विंटल बिका था बाजरा

राजकुमार नारनौल

इस बार नारनौल अनाज मंडी में पिछले साल की तुलना में करीब डेढ़ गुणा ज्यादा बाजरे की खरीद की गई है। वह भी तब, जब सरकारी खरीद एजेंसियों ने बाजरे को मानदंडों पर खरा नहीं उतरने पर एक दाना भी सरकारी समर्थन मूल्य पर नहीं खरीदा। इस बार सारे बाजरे की खरीद प्राइवेट में आदतियों द्वारा की गई है। इस बार नारनौल अनाज मंडी में 3,46,089 क्विंटल बाजरा खरीदा गया, जबकि पिछले वर्ष 2024-25 में महज 1,90,631 क्विंटल बाजरा बिका था। सरकार भावांतर भरपाई योजना के तहत किसानों को कम भाव मिलने पर 575 रुपये की भरपाई करेगी।

कृषि प्रधान जिला महेंद्रगढ़ में इस बार मानसून सीजन सामान्य सीजन की तुलना में ज्यादा लंबा चला था और सितंबर आते-आते भी बारिश होती रही थी, जिस कारण अनेक किसानों ने खड़ी बाजरे की फसल बारिश से खराब होने की बात कही थी। इसी फसल खराबे को ध्यान में रखकर सरकार ने क्षतिपूर्ति पोर्टल खोला था, ताकि जिन किसानों को बाजरे की फसल में नुकसान हुआ, वह क्षतिपूर्ति पोर्टल पर अपनी खराब बाजरे की फसल का विवरण अपलोड कर सकें। सरकार की योजना क्षतिपूर्ति पोर्टल के आधार पर खराब फसल का मुआवजा देने की थी, लेकिन इस बार खरीफ सीजन-2025 के तहत जब बाजरे की सरकारी समर्थन मूल्य पर खरीद हुई तो आवक बारिश से हुए नुकसान के एकदम विपरित मिली। क्योंकि शुरुआत में तो किसान फसल लेकर मंडी नहीं आए थे, लेकिन करीब एक महीना गुजरने उपरांत जब आवक शुरू हुई तो बाजरा आवक के रिकॉर्ड



नारनौल। पुरानी अनाज मंडी।

फोटो: हरिभूमि

रिकॉर्ड आवक के बावजूद किसानों को नुकसान

इस बार बाजरा की सरकारी खरीद नहीं हो पाई, क्योंकि बारिश बाजरे की कटाई के बाद तक होती रही थी। इस बरसात के कारण बाजरा खेतों में ही खड़ा-खड़ा बढरंग हो गया था। बढरंग बाजरे का खरीद का नियम नहीं है। इस कारण सरकार ने बढरंग बाजरे की खरीद नहीं की। जब भी बाजरे के सैपल टेक किए गए, वह हर बार फेल पाए गए। बाजरे की सरकारी खरीद चालू नहीं होने पर कई दिनों तक तो किसान मंडी में बाजरा लेकर नहीं पहुंचे, लेकिन जब पहुंचे तो उन्हें बाजरे का सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य 2200 रुपये प्रति क्विंटल नहीं मिला। मंडी में आदती इस बार बाजरे का दाम 1850 रुपये से लेकर 2200 रुपये से कम में ही खरीदा। इस प्रकार जिन किसानों का बाजरा 1800 या 1900 रुपये प्रति क्विंटल बिका, उन्हें करीब 300-400 रुपये का नुकसान प्रति क्विंटल हो गया है। हालांकि फिलहाल मंडी में अच्छी क्वालिटी का बाजरा 2400 रुपये प्रति क्विंटल तक पहुंच गया है, लेकिन अब जे फार्म नहीं मरे जाने के चलते किसानों को भावांतर योजना का लाभ नहीं मिलेगा।

टूट गए थे।

नारनौल में भी बाजरे की जबरदस्त आवक हुई और इसने पिछले रिकॉर्ड तोड़ते हुए नया आयाम स्थापित कर दिया। इस बार नारनौल अनाज मंडी में 12270 किसान 346089 क्विंटल बाजरा लेकर पहुंचे। गौर करने वाली बात है कि इस साल के 3.46 लाख क्विंटल की तुलना में पिछले वर्ष 2024-25 में महज 190631 क्विंटल तथा इससे पिछले साल वर्ष 2023-24 में 197124 क्विंटल ही बाजरा पहुंचा था। इस प्रकार इस साल पिछले दोनों सालों की तुलना में करीब डेढ़ गुणा ज्यादा बाजरे की आवक दर्ज की गई है। यहाँ यह भी बता दें कि इस बार मानसून सीजन में जबरदस्त बरसात का दौर चला था, जिससे बाजरे की समय-समय पर जोरदार सिंचाई

होती रही और इसका सीधा फायदा किसानों को ज्यादा पैदावार के रूप में हुआ। इसी का परिणाम रहा कि अबकी बार बाजरे की मंडियों में भी खूब आवक हुई। सर्वाधिक बाजरे की आवक कनीना एवं अटेली की अनाज मंडियों में हुई तथा इस बार नारनौल भी पीछे नहीं रहा। इस बार सरकार ने बाजरे का सरकारी समर्थन मूल्य 2775 रुपये प्रति क्विंटल घोषित किया था। इतना ही नहीं, बाजरे की खरीद अक्सर एक अक्टूबर से ही जाती रही है, लेकिन अबकी बार सरकार ने एक अक्टूबर की बजाए 23 सितंबर से ही बाजरे की मंडियों में खरीद चालू कर दी थी। यह बात अलग है कि यहाँ की मंडियों में 23 सितंबर ही नहीं, करीब एक महीने बाद तक किसान मंडी में बाजरा लेकर नहीं पहुंचे थे। सरकार की तरफ

मंडियों में खरीद गया बाजरा

अटेली मंडी	4,27,520 क्विंटल
कनीना मंडी	4,20,630 क्विंटल
नारनौल मंडी	3,46,089 क्विंटल
सतनाली मंडी	1,55,323 क्विंटल
महेंद्रगढ़ मंडी	1,19,440 क्विंटल
वांगल चौधरी मंडी	1,04,912 क्विंटल

राह बोले मंडी अधिकारी

मार्केट कमिटी की सचिव कुल्लु यादव ने बताया कि इस बार पिछले सालों की तुलना में बाजरे की रिकॉर्ड तोड़ आवक हुई है। इस कारण बाजरे की खरीद मंडियों में दिन में ही नहीं, रात को भी चली। इसमें व्यापारियों की ओर से भी भरपूर सहयोग मिला। किसानों ने भी कुछ घटनाओं को छोड़कर अच्छा तालमेल बनाए रखा तथा बाजरे की खूब खरीदारी हो सकी।

से इस बार मंडियों में 2200 रुपये प्रति क्विंटल की दर से खरीद एजेंसियों द्वारा बाजरा खरीदना लागू किया था और 575 रुपये भावांतर खरीद के तहत सरकार द्वारा सीधे किसानों के खाते में डालना था। यह भावांतर केवल उन्हीं किसानों को मिलेगा, जिन्होंने मंडी जाकर बाजरा बेचा और जे फार्म भरा है। खरीफ सीजन के तहत फसलों की खरीद एक अक्टूबर से 15 नवंबर तक की जाती है। गौर करने वाली यह बात भी है कि इस बार 15 नवंबर आने के बावजूद किसान मंडियों में गेटपास के लिए खड़े हुए थे। हालात इस कदम थे कि अटेली मंडी के किसानों ने तो गेटपास नहीं मिलने के विरोध में एनएच 11 को जाम तक कर दिया था। बाजरा बेचने की फिराक में लगे किसानों का मानना था कि उनका बाजरा तो अब भी बकाया ही रह गया। ऐसे में सरकार बाजरे के एक-एक दाने की खरीद करे, लेकिन सीजन 15 नवंबर को खत्म होने उपरांत बाजरा जे फार्म यानि भावांतर भरपाई के तहत नहीं खरीदा गया।

रिश्वत के आरोपी पटवारी को अदालत ने सुनाई 14 दिन की न्यायिक हिरासत

नारनौल। कनीना तहसील से 10 हजार रुपये रिश्वत लेने उपरांत स्टेट विजिलेंस एवं एंटी करप्शन ब्यूरो गुरुग्राम की टीम द्वारा गिरफ्तार किए गए आरोपित पटवारी विक्रम सिंह को अदालत ने 14 दिन की न्यायिक हिरासत सुनाई है, जिस पर उसे नसीबपुर जेल भेज दिया गया। 20 नवंबर की सायं को एसीबी गुरुग्राम की टीम ने कनीना तहसील के पटवारी विक्रम सिंह को रामबाग निवासी अमनदीप सिंह से 10 हजार रुपये की रिश्वत लेने के आरोप में रंगे हाथों गिरफ्तार किया था। पटवारी ने जमीन के एक मामले में अमनदीप सिंह से 22500 रुपये सुविधा शुल्क के तौर पर मांगे थे। अमनदीप ने दो हजार रुपये पटवारी के क्यूटर



ऑपरेशन विजय सिंह को दे दिए थे। शेष 20 हजार रुपये पटवारी को दो किस्तों में देने तय हुए थे। इसमें से दस हजार रुपये गुरुवार सायं को पटवारी विक्रम को दिए गए तथा एसीबी की टीम ने उसे धर-दबोच लिया था। भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करने उपरांत अगले रोज कोर्ट में पेश करने पर एक दिन का रिमांड सुनाया। रिमांड उपरांत आज उसे फिर से कोर्ट में पेश किया तो अदालत ने उसे 14 दिन के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया। विजिलेंस इंस्पेक्टर प्रकाश चंद ने बताया कि अभी क्यूटर ऑपरेशन विजय सिंह की गिरफ्तारी शेष है तथा जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

नागरिक अस्पताल में नवजात बच्चे की मौत, परिजनों ने किया हंगामा

नारनौल। नागरिक अस्पताल में शनिवार को नवजात बच्चे की मौत होने पर परिजनों ने हंगामा कर दिया। जिसकी सूचना मिलने पर मौके पर पुलिस पहुंची। हालांकि समाचार स्थले जाने तक परिजनों ने पुलिस में शिकायत नहीं दी थी। जानकारी के अनुसार गांव मुंडियाखेड़ा निवासी महिला सपना को प्रसव पीड़ा होने पर नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया था। जिसके बाद नागरिक अस्पताल के चिकित्सकों ने जांच के बाद बताया कि नामल डिलीवरी नहीं होगी। ऑपरेशन से ही बच्चा होगा। इसके बाद सायं को करीब तीन बजे महिला का ऑपरेशन किया गया।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद चलेगा पता- सीएनओ

नागरिक अस्पताल के सीएनओ डॉ. अशोक ने बताया कि मृतक बच्चे का पोस्टमॉर्टम करवाया जा रहा है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में जो आण्णा, उसके बाद ही पता चल जाएगा। अगर कोई शिकायत देता है और किसी की लापरवाही सामने आती है, तो उस बारे में भी जांच की जाएगी।

लड़के की मौत हो गई। लड़के की मौत हो जाने पर परिजनों ने अस्पताल में हंगामा कर दिया। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने परिजनों से बातचीत की। इस पर परिजनों ने चिकित्सकों पर लापरवाही के आरोप लगाए। सपना की पति सत्यपाल ने बताया कि यहाँ पर चिकित्सकों व स्टाफ ने नवजात की सही देखभाल नहीं की।



THE VEDANTA INTERNATIONAL SCHOOL
Shaping minds, building a better future

ADMISSION 2026 - 2027 OPEN

Pre-Nursery to Class 9 & 11
(Science · Commerce · Arts)

CHAIRMAN'S MESSAGE

At The Vedanta International School, education goes beyond academics; it focuses on character development, nurturing talent, and preparing students for a meaningful future. The school aims to empower students with confidence, discipline, and moral values, offering world-class facilities. Each child receives personal attention in a safe environment, with opportunities to excel in academics, sports, and co-curricular activities. The school, alongside dedicated staff and supportive parents, strives to cultivate responsible, creative, and compassionate young leaders. Parents are invited to join The Vedanta family in this journey of growth and holistic development.



Dr. Vinod Kumar Yadav
Chairman, The Vedanta International School

ACHIEVEMENTS

- Sports Achievements**
 - Gold & Silver medals at District and State Level in
 - Swimming
 - Long Jump
 - Tug of War
 - Athletics (100m, Shot Put, Javelin)
 - Students selected for State-Level Championships across multiple categories.
- Co-Curricular Success**
 - Outstanding performances in Dance, Music & Cultural Events.
 - Participation and recognition in Inter-School Competitions.
 - Active involvement of students in Art, Craft, Yoga & Skating events.
- School Excellence**
 - Successfully hosted District Level Science Essay Writing Competition 2025-26.
 - Recognised for discipline, academic environment, and strong value-based education.
- Academic Excellence**
 - Students consistently scoring top positions in district-level examinations.
 - Strong performance in Olympiads, NTSE, and Science competitions.



Location
7th Mile Stone, M/Garh Road, Narnaul, India, 123001

Phone
+91 8800002051, +91 8800002052



Our Achievers



Why Choose The Vedanta International School?

- World-Class Infrastructure**
 - Smart Classrooms with centralised AC Campus
 - Spacious, fully ventilated classrooms
 - Modern Science, Maths & Computer Labs
 - CCTV-enabled safe campus with trusted OTP pickup
 - Lush green playground & sports facilities
- Academic Excellence**
 - Experienced and qualified faculty
 - Concept-based & activity-based learning
 - Focus on English communication
 - Regular tests, worksheets, and academic monitoring
- Holistic Development**
 - Dance, Music, Skating, Yoga & Meditation
 - Art & Craft Studio
 - Indoor Games (Chess, Carrom, Ludo)
 - Outdoor Sports & Taekwondo
 - Personality development & moral education
- Transport Facilities**
 - Fully AC Transport with Live GPS tracking
 - Trained drivers & attendants
 - CCTV-enabled safe transport
- Special Features**
 - Affordable fee structure
 - Dedicated doubt-clearing sessions
 - Daily homework and revision
 - Parent-Teacher Meetings (Every Month)
 - Focus on discipline, values, and confidence-building



गोल्ड लीजिंग, जिसके जरिए आजकल लोग कर रहे कमाई क्या हैं फायदे और नुकसान

आजकल कई लोग ऐसे हैं जो गोल्ड लीजिंग के जरिए काफी अच्छी कमाई कर रहे हैं। अब यह गोल्ड लीजिंग क्या है? आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। साथ में गोल्ड लीजिंग के फायदे और नुकसान के बारे में भी बताने वाले हैं।



हर व्यक्ति चाहता है, कि उसके पास ज्यादा पैसा हो और उसे पैसों की कभी कमी न हो। इसके लिए लोग कमाई करने के साथ साथ अपने पैसों को निवेश करते हैं। इसके अलावा आजकल लोग अपनी तिजोरी में रखें हुए सोने से भी कमाई कर रहे हैं। जो हां, हम बात कर रहे हैं गोल्ड लीजिंग की। आजकल कई लोग ऐसे हैं जो गोल्ड लीजिंग के जरिए काफी अच्छी कमाई कर रहे हैं। अब यह गोल्ड लीजिंग क्या है? आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। साथ में गोल्ड लीजिंग के फायदे और नुकसान के बारे में भी बताने वाले हैं।

गोल्ड लीजिंग क्या होता है ?

गोल्ड लीजिंग को आसान शब्दों में समझें तो गोल्ड लीजिंग में आप अपने सोने को किराए पर देते हैं और कमाई कर लेते हैं। आजकल कई डिजिटल प्लेटफॉर्म लोगों को गोल्ड लीजिंग की सुविधा ऑफर कर रहे हैं। इन प्लेटफॉर्म के जरिए लोग अपने गोल्ड को किराए पर दे सकते हैं और कमाई कर सकते हैं। गोल्ड लीजिंग में आप एक निश्चित समय के लिए अपने गोल्ड को लीज या किराए पर देते हैं। इसके बदले में आपको 2 से 7 प्रतिशत तक रिटर्न मिलता है। अब खास बात यह है कि गोल्ड लीजिंग में मिलने वाला रिटर्न आपको गोल्ड के रूप में भी मिल सकता है और यह कैश में भी हो सकता है। वहीं अगर सोने का भाव बढ़ता है, तो आपका रिटर्न भी बढ़ता है।

गोल्ड लीजिंग के फायदे-नुकसान

गोल्ड लीजिंग में अगर सोने की कीमतें बढ़ती हैं तो आपको ही फायदा होगा लेकिन सोने की कीमत गिरने पर आपका रिटर्न कम हो सकता है। गोल्ड लीजिंग के जरिए आप अपने तिजोरी में रखे सोने के जरिए काफी अच्छी कमाई कर सकते हैं लेकिन गोल्ड लीजिंग एक नया ट्रेंड है। ऐसे में इसके लिए अभी नियम पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। वहीं कई मामलों में निवेशक के साथ फ्रॉड भी हो सकता है। इसके अलावा अगर आप गोल्ड लीजिंग की अवधि के बीच में अपना सोना वापस चाहते हैं, तो सोना वापस लेना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

बच्चे के जन्म से शुरू करें निवेश, 18 साल होने पर तैयार होगा 50 लाख का फंड

पढ़ाई से लेकर शादी तक, सबका खर्च बह रहा है खर्च, क्या आप अपने बच्चे के भविष्य निर्माण के लिए तैयार हैं? यह सवाल इसलिए क्योंकि घर में बच्चे सबको प्रिय होते हैं। लेकिन बच्चों के सपनों को साकार करने के लिए बच्चे का आर्थिक भविष्य संवारने का काम सभी नहीं करते।

आमतौर पर देखा जाता है कि माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाई या शादी जैसे लंबे लक्ष्यों के लिए उनके नाम पर ही एक अलग फंड बनाना पसंद करते हैं। यह फंड अक्सर जन्मदिन या खास मौकों पर मिली छोटी-छोटी रकम से शुरू होता है और फिर माता-पिता समय-समय पर इसमें नियमित रूप से पैसा जोड़ते रहते हैं। विशेषज्ञ भी इसे अच्छा तरीका मानते हैं। आज हम आपको बता रहे हैं म्यूचुअल फंड के बारे में।

बच्चे की पढ़ाई और शादी की चिंता रहेगी दूर

भविष्य में अच्छे बिजनेस करने के लिए भी मिलेगा पैसा

चिल्ड्रन म्यूचुअल फंड के क्षेत्र में उदाहरण के लिए हम आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल चिल्ड्रन फंड को देखते हैं। यह एक ऐसी योजना है जिसका लंबा और भरोसेमंद रिकॉर्ड रहा है। इसने समय के साथ अच्छे रिटर्न दिए हैं। यह एक ओपन-एंडेड निवेश योजना है जो बच्चों के लिए बनाई गई है। इसमें कम से कम पांच साल का लॉक-इन होता है, या फिर जब बच्चा बालिंग हो जाए, जैसा भी पहले हो। यह फंड इक्विटी और डेट दोनों प्रकार की संघटियों में निवेश करता है और जरूरत पड़ने पर बेंचमार्क से बाहर उभरता है जो अपने बच्चों में भी अवसर के अनुसार निवेश करने का प्रोत्साहन रखता है।



उतार-चढ़ाव का असर भी कुछ हद तक कम होता

इस योजना की खासियत इसका बदलते हालात के मुताबिक ढलने वाला निवेश तरीका है। यह किसी एक तय निवेश फॉर्मूले पर अनुसर कभी बचाव की मुद्रा में तो कभी आक्रामक रख अपनाती है। इससे फंड मैनेजर को समय-समय पर आर्थिक माहौल के हिसाब से उलट दिशा में भी कदम उठाने का अवसर मिलता है, जिससे पोर्टफोलियो में एक लचीलापन और जीवंतता बनी रहती है।

बाजार के हिसाब से होता है काम

जब बाजार में स्थिरता की जरूरत हो, तो यह फंड अपनी हिस्सेदारी का करीब 35% तक डेट में ले जा सकता है। और जब माहौल अनुकूल हो, तो उसी तेजी से फिर इक्विटी में लौट भी सकता है। इससे एक तरफ बढ़त के अवसरों का लाभ मिलता है और दूसरी तरफ अनिश्चित समय में उतार-चढ़ाव का असर भी कुछ हद तक कम होता है। कुल मिलाकर, यह चिल्ड्रन फंड उन अभिभावकों के लिए एक बेहतर विकल्प बनकर उभरता है जो अपने बच्चों की निवेश योजना में लचीलापन, सक्रिय फैसले और लंबी अवधि की सोच इन तीनों का

संतुलित मेल चाहते हैं।

व्या है रिटर्न

अगर कोई व्यक्ति 31 अगस्त 2001 को आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल चिल्ड्रन फंड में 10 लाख रुपये निवेश किया होता तो 31 अक्टूबर 2025 तक यह राशि बढ़कर लगभग 3.3 करोड़ रुपये हो जाती। यह 15.58% की उल्लेखनीय वार्षिक कंपाउंडेड वृद्धि है। इसकी तुलना में, बेंचमार्क में ऐसा ही निवेश करीब 2.12 करोड़ का होता। यानी सीएजीआर 13.46 पर्सेंट का रिटर्न मिला है। इस फंड के एसआईपी रिटर्न भी कमाल के रहे हैं। अगर शुरूआत से हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की जाती, तो कुल 29 लाख का निवेश 31 अक्टूबर, 2025 तक 2.2 करोड़ रुपये का हो जाता। अगर पिछले 15 साल से निवेश किया जा रहा है तो 18 लाख का योगदान बढ़कर 55.4 लाख रुपये तक पहुंच जाता। इसका मतलब 13.76 फीसदी सीएजीआर की दर से रिटर्न मिला। इसी अवधि में इसके बेंचमार्क का रिटर्न केवल 11.88 फीसदी है। पिछले एक, तीन और पांच साल में भी फंड ने लगातार अपने बेंचमार्क से बेहतर प्रदर्शन किया है।

जल्दी निवेश करना क्यों है जरूरी

मान लीजिए कि किसी अभिभावक को अपने बच्चे के 18 साल का होने तक 50 लाख रुपये का कोर्पस तैयार करना है। अगर पहले माता-पिता (ए) ने बच्चे के जन्म के समय ही निवेश शुरू किया, तो 18 साल की अवधि में 12% की मान्य वृद्धि दर पर उन्हें हर महीने 6,598 रुपये निवेश करने होंगे। कुल मिलाकर 14.25 लाख रुपये का योगदान करना पड़ेगा। अगर दूसरे माता-पिता (बी) ने बच्चे के छह साल का होने पर निवेश शुरू किया, तो 12 साल की अवधि में उन्हें हर महीने 15671 रुपये लगाने होंगे। कुल योगदान 22.56 लाख रुपये का हो जाएगा। अगर तीसरे माता-पिता (सी) ने निवेश तब शुरू किया जब बच्चा 12 साल का हुआ, तो 12% की वृद्धि दर पर उन्हें हर महीने 47,751 रुपये लगाने होंगे और कुल योगदान 34.38 लाख रुपये तक पहुंच जाएगा। यानी लक्ष्य एक ही हो लेकिन देरी करने वालों को कहीं ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। माता-पिता बी को ए की तुलना में 12.3 लाख और सी को ए की तुलना में 12.3 लाख और सी को 20.13 लाख रुपये अधिक निवेश करने पड़ेंगे। यही है निवेश में देरी की वास्तविक लागत। अंत में, बात फिर वहीं आती है। निवेश जितना जल्दी शुरू होगा, लंबे समय वाले इक्विटी निवेश की शक्ति उतनी ही प्रभावी होगी। माता-पिता चाहें तो बहुत सधी हुई रफ्तार से बच्चे के सपनों जैसा उज्वल भविष्य गढ़ सकते हैं।



जॉइंट फैमिली खत्म, अब बुढ़ापे में कौन देगा सहारा? मिडिल क्लास की सबसे बड़ी टेंशन पर अलर्ट

भारत में रिटायरमेंट का संकट गहरा रहा है, क्योंकि पुरानी व्यवस्थाएं अब पर्याप्त नहीं हैं। बढ़ती उम्र, स्वास्थ्य खर्च और सामाजिक सुरक्षा की कमी के कारण 70% से अधिक वरिष्ठ नागरिक परिवार पर निर्भर हैं। योजना बनाने में देरी से रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त धन जमा नहीं हो पाता, जिससे भविष्य अनिश्चित हो जाता है।

नई दिल्ली: भारत में रिटायरमेंट का संकट अब आने वाला नहीं है, बल्कि यह पहले से ही मौजूद है। ज्यादातर भारतीय परिवार इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हैं। वेल्थ एडवाइजर नितिन पुष्करन ने इसे लेकर लिंकडइन पर एक पोस्ट में चेतावनी दी है। उनके मुताबिक, बच्चों का सहारा, पेंशन या प्रॉपर्टी जैसी पुरानी व्यवस्थाएं अब रिटायरमेंट को सुरक्षित करने के लिए काफी नहीं हैं। पुष्करन



ने लिखा, 'हम संयुक्त परिवार वाली व्यवस्था से निकलकर एकल आय वाली अर्थव्यवस्था में आ गए हैं।' उन्होंने बताया कि बढ़ती उम्र, स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी खर्च और सामाजिक सुरक्षा की कमी ने मिलकर देश में एक बड़ा आर्थिक संकट पैदा कर दिया है। पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड

डेवलपमेंट अथॉरिटी (पीएफआरडीए) और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों के अनुसार, 60 साल से ज्यादा उम्र के 70% से अधिक भारतीय पूरी तरह से अपने परिवार पर निर्भर हैं। वहीं, 10% से भी कम लोग ईपीएफ, एनपीएस या सुपरएन्युएशन जैसी किसी भी रिटायरमेंट स्कीम में नियमित रूप से पैसा जमा करते हैं।

क्या फेल होती है रिटायरमेंट प्लानिंग?

पुष्करन ने इस बात पर जोर दिया कि रिटायरमेंट में असफलता का कारण आय की कमी नहीं, बल्कि योजना बनाने में देरी है। उन्होंने एक उदाहरण दिया कि अगर कोई 35 साल का व्यक्ति आज से 10,000 रुपये हर महीने एसआईपी में लगाना शुरू करे तो 60 साल की उम्र तक उसके पास 1 करोड़ रुपये से ज्यादा जमा हो जाएंगे।

योजना बनाने में देरी से रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त धन नहीं हो पाता जमा जिससे भविष्य हो जाता है अनिश्चित

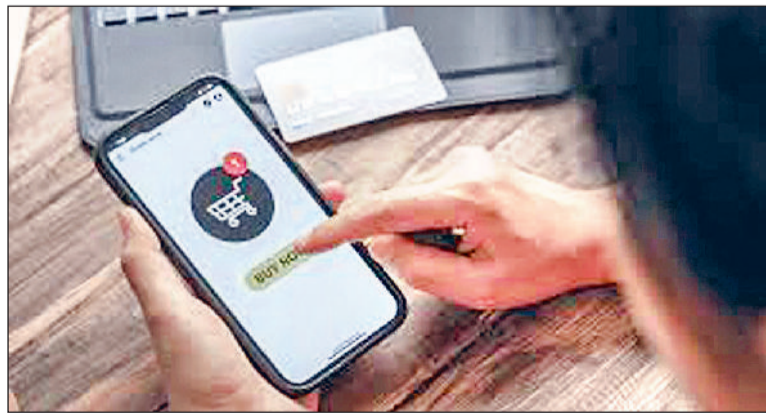
संकट बढ़ाने वाले कई और कारण

इस संकट को बढ़ाने वाले कुछ और कारण भी हैं। स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाला खर्च 11-14% तक है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा में से एक है। साथ ही, लोगों की औसत उम्र भी 70 साल से ज्यादा हो गई है। पुष्करन ने यह भी बताया कि नौकरी के बीच में ईपीएफ से पैसे निकालना भी एक बड़ी वजह है, जिससे कई नौकरोपेशा लोगों का रिटायरमेंट के लिए पुराना होने वाला एकमात्र जरिया खत्म हो जाता है। भारत लौटने वाले एनआरआई (अनिवासी भारतीय) भी अक्सर रिटायरमेंट के बाद के खर्चों का सही अंदाजा नहीं लगा पाते। उनकी सलाह सीधी और स्पष्ट है, 'रिटायरमेंट के लिए पहले प्राथमिकता से योजना बनाएं, बची हुई रकम से नहीं। आपकी भविष्य की जीवनशैली आपके बच्चों या ईएमआई पर निर्भर नहीं होनी चाहिए!'

स्मार्ट होता भारत अब यूपीआई से पा रहा क्रेडिट का फायदा, मिल रहे रिवाँर्ड और कैशबैक भी

पै योजना बिजनेस डेस्क

सो से जुड़े लेन-देन के तरीकों की भारत में यात्रा काफी लंबी और रोचक रही है। पहले जहां लोग जेब में कैश या चेक लेकर घूमते थे, तो वहीं बाद में इसकी जगह डेबिट/क्रेडिट कार्ड्स ने ले ली। और फिर आया पेमेंट को सुपर ईजी बना देने वाला बदलाव, यानी यूपीआई क्यू कोड, जिसमें व्यक्ति बस एक स्कैन करता है और महज सेकेंड्स में ट्रांजेक्शन पूरा हो जाता है। अब इस डिजिटल पेमेंट के तरीके में एक और दमदार ट्विस्ट आ चुका है। इसमें लोगों को न सिर्फ यूपीआई पेमेंट की रफ्तार और सहूलियत मिल रही है बल्कि वो क्रेडिट की ताकत का फायदा भी उठा रहे हैं। सोचिए कि आप किसी किराना स्टोर में जाएं, वहां पर अपनी रोजाना की चीजें खरीदें और यूपीआई स्कैन से तुरंत पेमेंट कर दें, लेकिन इसके बावजूद आपके सर्विंग अकाउंट से एक भी पैसा न कटे! और तो और आपको क्रेडिट कार्ड कैशबैक, रिवाँर्ड पॉइंट्स व बड़ी खरीदारी के भुगतान को ईएमआई में तब्दील करने का विकल्प भी मिल जाए। है ना ये शॉपिंग एक्सपीरियंस में दमदार ट्विस्ट? इसका श्रेय जाता है कीवी जैसे प्लेटफॉर्म को जिसने यूपीआई पेमेंट्स को एप के जरिए क्रेडिट से जोड़ने का काम किया है। यानी अब आप यूपीआई पेमेंट सीधे क्रेडिट कार्ड से कर सकते हैं।



एक स्कैन और बैंक से सीधे कट जाती है राशि

चाहे किताब खरीदनी हो, घर के लिए चावल या फिर ऑशिंग मशीन, सभी तरह की खरीदारी के लिए यूपीआई सबसे आम तरीकों में से एक बन चुका है। एक स्कैन से सारे पेमेंट हो जाते हैं, जिसके लिए बैंक अकाउंट से पैसे कटते हैं। अब इसमें समस्या ये है कि अगर व्यक्ति के खाते में पर्याप्त राशि नहीं हुई, तो पेमेंट अप्रूप नहीं होगा। साथ ही इसमें पूरा भुगतान एकमुश्त ही करना होता है फिर चाहे आप 10 रुपये की चीज खरीद रहे हों या फिर 50,000 रुपये की। इससे जेब पर एकदम से काफी भार भी पड़ता है। लेकिन अगर आपको यूपीआई के साथ क्रेडिट कार्ड की ताकत जुड़ी हो, तो इन चीजों का भार हल्का हो जाता है।

रुपे क्रेडिट कार्ड फॉर यूपीआई के फायदे

■ तुरंत और आसान भुगतान बस स्कैन करें और यूपीआई से भुगतान करें। यानी आपको पेमेंट के लिए व तो अपने साथ क्रेडिट कार्ड कैरी करने की जरूरत है और ना ही वॉलेट में कैश तलाशने की।

■ रिवाँर्ड और कैशबैक यूपीआई पेमेंट करने पर भी कैशबैक और रिवाँर्ड पॉइंट्स जैसे फायदे मिलते हैं, वो भी बिना किसी उलाहान मरी शर्तों या छिपे हुए नियमों के।

■ बाद में पेमेंट की सुविधा: बड़े अमाउंट को आप आसानी से ईएमआई में तब्दील कर सकते हैं, जिससे आपकी जेब पर एकदम से बोझ नहीं आता।

यहां क्रेडिट और यूपीआई चलते हैं साथ-साथ

यूपीआई पर क्रेडिट का फायदा पाने के काम को कीवी ने बेहद आसान बना दिया है। बस आपको कीवी एप पर साझेदार बैंकों द्वारा जारी किए गए पर रुपे क्रेडिट कार्ड को ऐप के जरिए यूपीआई से जोड़ना है, जिसका प्रोसेस काफी आसान है। एक बार ये लिंक हो गया, तो यूजर कीवी एप के जरिए ईजी पेमेंट, रिवाँर्ड्स के साथ ही पेमेंट को ईएमआई में बदलने जैसे कई फायदों का लाभ उठा सकेगा। कीवी एप से हुए यूपीआई पेमेंट्स पर कम से कम 1.5% का कैशबैक मिलता है, जो सीधा बैंक में जाता है, जिसे कभी भी निकालकर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें न तो कोई छुपी हुई शर्तें हैं और ना ही कोई जटिल कन्डिशन। और तो और कीवी एप पर उपलब्ध रुपे क्रेडिट कार्ड फॉर यूपीआई पूरी तरह से लाइफटाइम फ्री भी है। कुल मिलाकर ये आज के डिजिटल इंडिया के लिए ही बना है,

जो शॉपिंग के एक्सपीरियंस को ईजी और रिवाँर्ड रिच बना देता है।

क्रेडिट-स्मार्ट और सशक्त होता भारत

जैसे-जैसे ज्यादा लोग यूपीआई के जरिए क्रेडिट का इस्तेमाल करने लगे हैं, वैसे-वैसे भारत में पैसे खर्च करने और संभालने का तरीका धीरे-धीरे बदलता जा रहा है। जो लोग अब तक सिर्फ डेबिट कार्ड या नकद पर निर्भर थे, उनके लिए ये बिना किसी झंझट के क्रेडिट की दुनिया में कदम रखने का आसान रास्ता बन गया है। कीवी जैसे प्लेटफॉर्म की पारदर्शी और आसान सेवाओं से भारत में डिजिटल पेमेंट न सिर्फ तेज हो रहे हैं, बल्कि ये लोगों को अधिक सशक्त और क्रेडिट स्मार्ट भी बना रहे हैं, जो नए भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में सक्षम बनाता है।



हर माह 10,000 रुपये की बचत, बच्चों के लिए बनाएं 43 लाख का फंड

पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ स्कीम और सुकन्या समृद्धि योजना यानी एसएसवाई स्कीम में आप हर साल थोड़ा थोड़ा निवेश कर लाखों का फंड बना सकते हैं। दोनों स्कीम में आपको 15 सालों तक अपने निवेश को जारी रखना होता है। आइए जानते हैं...

पैसों को एक अच्छी स्कीम में निवेश करना हर व्यक्ति के लिए जरूरी होता है। हर व्यक्ति को अपनी मंशली इनकम का कुछ हिस्सा एक अच्छी स्कीम में निवेश जरूर करना चाहिए, जिससे वह अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित कर सकें। ऐसी कई स्कीम और योजनाएं हैं, जहां आप अपने पैसों को सुरक्षित निवेश कर सकते हैं और लाखों का रिटर्न पा सकते हैं। आज हम आपको दो ऐसी स्कीम में बारे में बताएंगे, जिसमें आप हर महीने केवल 10,000 रुपये निवेश कर पूरे 43 लाख रुपये से ज्यादा का फंड बना सकते हैं। यह दोनों स्कीम सरकारी स्कीम हैं। ऐसे में यहां आपको पैसा भी सुरक्षित रहेगा। हम बात कर रहे हैं पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ स्कीम और सुकन्या समृद्धि योजना यानी एसएसवाई स्कीम के बारे में। दोनों ही स्कीम में आप हर साल थोड़ा थोड़ा निवेश कर सकते हैं और दोनों स्कीम में आपको 15 सालों तक अपने निवेश को जारी रखना होता है।

पीपीएफ और एसएसवाई में रिटर्न

पीपीएफ में 7.1 प्रतिशत की दर से रिटर्न मिलता है और एसएसवाई में 8.2 प्रतिशत की दर से रिटर्न मिलता है। पीपीएफ में कोई भी व्यक्ति निवेश कर सकता है लेकिन एसएसवाई में केवल माता-पिता अपना 10 साल से कम उम्र की बेटों के नाम पर निवेश कर सकते हैं। दोनों ही स्कीम में 1000 रुपये से 150 लाख रुपये प्रति वर्ष निवेश किया जा सकता है।

ऐसे बढ़ेगा आपका फंड

अगर आप हर महीने 10,000 रुपये की बचत कर 5-5 हजार रुपये दोनों स्कीम में 15 सालों तक निवेश करते हैं तो आप 43 लाख रुपये से ज्यादा का फंड बना सकते हैं। हर महीने 5000 रुपये अगर आप पूरे 15 सालों तक पीपीएफ में निवेश करते हैं तो आप 15 सालों में कुल 9 लाख रुपये निवेश करेंगे। 15 साल बाद आपको कुल 16.27 लाख रुपये मिलेंगे। ऐसे में आपको 7.27 लाख रुपये का लाभ होगा। हर महीने 5000 रुपये अगर आप पूरे 15 सालों तक एसएसवाई में निवेश करते हैं तो आप 15 सालों में कुल 9 लाख रुपये निवेश करेंगे। 15 साल बाद आपको कुल 27.71 लाख रुपये मिलेंगे। ऐसे में आपको 18.71 लाख रुपये का लाभ होगा। इस तरह से आप 15 सालों में कुल 43.98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।

लॉन्ग टर्म एसआईपी करोड़पति तो बना देगा, लेकिन उस पर टैक्स कितना भरना पड़ेगा?

एक्सपर्ट्स की राय

बिजनेस डेस्क

एसआईपी में निवेश करके लॉन्ग टर्म में करोड़ों का फंड बनाया जा सकता है। आजकल वित्तीय एक्सपर्ट्स भी एसआईपी में निवेश करने की सलाह देते हैं। निवेशकों के साथ ही सोशल मीडिया पर भी एसआईपी में निवेश करने के फायदे गिनाए जाते हैं। यह सुनकर तो बहुत अच्छा लगता है कि 20-25 साल लगातार एसआईपी में निवेश करने के बाद आपके पास करोड़ों रुपए का फंड जमा हो जाएगा, आप करोड़पति बन जाएंगे। लेकिन आपको यह नहीं बताया जाता है कि एसआईपी रिटर्न जब आपको मिलेगा तब आपको कितना टैक्स भरना पड़ेगा। लॉन्ग टर्म में कमाई गई आई पर आपको टैक्स का भुगतान करना पड़ेगा जिससे आपका रिटर्न कम हो जाएगा।

रिटर्न के साथ टैक्स का भुगतान

लंबे समय के बाद आप यदि एसआईपी पर भारी भरकम मुनाफा कमाते हैं तो उस पर आपको टैक्स का भुगतान करना ही पड़ेगा। इसीलिए आपको पहले ही समझ जाना चाहिए कि लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन टैक्स सिस्टम के अंतर्गत एसआईपी रिटर्न पर आपको कितना टैक्स देना पड़ेगा और कितना रिटर्न आपको मिल सकता है।

उदाहरण से समझिये पूरा गणित

मान लेते हैं कि आप हर महीने 15000 एसआईपी में निवेश करते हैं। यह एसआईपी लगातार 20 साल तक जारी रखी जाती है और यदि इस पर आपको 12% की दर से औसतन रिटर्न भी मिले तो 20 साल बाद मिलने वाला ब्याज सहित कुल रिटर्न 1,49,87,219 हो जाएगा। प्लीज रिटर्न पर आपको लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन टैक्स का भुगतान करना होगा। नियम के अनुसार यदि आपको लाभ 1 साल से ज्यादा के निवेश पर 1,25,000 से ज्यादा है तो उस पर आपको 12.5% टैक्स के साथ 4% सेस का भी भुगतान करना पड़ेगा। यानी 1,49,87,219 में से 1,25,000 हटाने के बाद बची राशि पर आपको 12.5% टैक्स और 4% सेस का भुगतान करना पड़ेगा। इसके बाद भी आपको एक करोड़ से ज्यादा का रिटर्न तो मिलेगा ही लेकिन आपका रिटर्न थोड़ा कम हो जाएगा। इसलिए यदि आप लॉन्ग टर्म के लिए एसआईपी कर रहे हैं तो अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग में यह भी शामिल करें कि उसे एसआईपी पर आपको बाद में टैक्स का भुगतान भी करना पड़ेगा।

खबर संक्षेप

फिजिकल साइंस की टॉप-10 सूची पर किया कब्जा
महेन्द्रगढ़। इंद्रिया गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा फिजिकल साइंस के द्वितीय सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें यदुवंशी कॉलेज के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की टॉप-10 सूची में से पांच स्थान पर कब्जा किया, इस परीक्षा परिणाम में तमन्ना पुत्री कृष्ण कुमार ने मैथ ऑनर्स में विश्वविद्यालय की टॉप-10 सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सड़क सुरक्षा परीक्षा में छात्रा अर्पिता प्रथम

कनीना। मॉडल संस्कृति स्कूल में सड़क सुरक्षा की लिखित परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें ब्लॉक के सभी सरकारी-गैर सरकारी स्कूल के बच्चों ने भाग लिया। आरआरसीएम स्कूल कनीना की पांचवी कक्षा की अर्पिता पुत्री अजीत ने प्रथम लेवल की परीक्षा में प्रथम स्थान पाकर अपने स्कूल और माता-पिता का नाम रोशन किया। संस्था चेयरमैन रोशनलाल यादव ने छात्रा को मेडल पहनाकर सम्मानित किया।

एमआर स्कूल में बच्चों ने स्पर्धा में दिखाई प्रतिभा

नारनौल। एमआर पब्लिक स्कूल में चारों सदनों के मध्य नृत्य व संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें चारों सदनों के छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों को अपनी कला प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम में विभिन्न पारंपरिक नृत्यों की प्रस्तुतियां दी गईं। प्रतियोगिता का शुभारंभ प्राधान्याचार्या अनिता यादव ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया।

कच्चा रास्ता होगा पक्का निर्माण कार्य शुरू

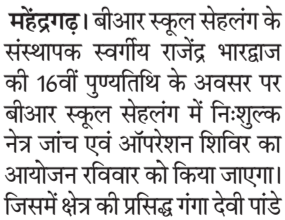
महेन्द्रगढ़। मार्केटिंग बोर्ड ने कुराहवटा वाया क्रेशर जोन वाया पांचों पीर जेरपुर का 800 मीटर एरिया के कच्चे रास्ते का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। मार्केटिंग बोर्ड की ओर से एक करोड़ 24 लाख रुपये खर्च कर सड़क बनाई जाएगी। ग्रामीणों ने बताया कि यह रास्ता कुराहवटा वाया क्रेशर जोन वाया पांचों पीर जेरपुर तक जाता है। जिससे इस रास्ते पर दोनों गांव के लोगों का आना जाना हर वक्त लगा रहता है। लेकिन यह रास्ता कच्चा होने के कारण यहां हर वक्त धूल-मिट्टी उड़ती रहती है। जिससे लोगों को यहां से गुजरने में परेशानी उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि रास्ता कच्चा होने से बरसात के दिनों यहां कीचड़ बनी रहती है।

कल राजकीय महाविद्यालय में कठेगी निरीक्षण

महेन्द्रगढ़। इंद्रिया गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा राजकीय महाविद्यालय में प्रावधानिक संबद्धता के नवीनीकरण एवं पूर्व निर्धारित मानकों की अनुपालना की जांच के लिए विश्वविद्यालय की तीन सरकारी निरीक्षण टीम 24 नवंबर को महाविद्यालय का दौरा करेंगी। इस संबंध में जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी एवं महाविद्यालय प्राचार्या प्रो. डॉ. पूर्ण प्रभा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा गठित निरीक्षण समिति में इंद्रिया गांधी विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग समन्वयक प्रो. संजय हुड्डा, गणित विभाग से डॉ. महाबीर बड़क तथा राजनीति विज्ञान विभाग से डॉ. मोनिका यादव शामिल हैं।

बीआर स्कूल सेहलंग में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर आज

महेन्द्रगढ़। बीआर स्कूल सेहलंग के संस्थापक स्वर्गीय राजेंद्र भारद्वाज की 16वीं पुण्यतिथि के अवसर पर बीआर स्कूल सेहलंग में निःशुल्क नेत्र जांच एवं ऑपरेशन शिविर का आयोजन रविवार को किया जाएगा। जिसमें क्षेत्र की प्रसिद्ध गंगा देवी पांडे आंखों की अस्पताल के विशेषज्ञों द्वारा नेत्र जांच की जाएगी। शिविर में विधायक कंवर सिंह यादव मुख्य अतिथि के रूप में गिरफ्तार करेंगे। शिविर में आने वाले मरीजों की आंखों की संपूर्ण जांच की जाएगी तथा डॉक्टरों की ओर से आवश्यक परामर्श दिया जाएगा। जांच के दौरान रोशनी वपरदे की स्थिति की



राजेंद्र भारद्वाज की 16वीं पुण्यतिथि पर कैप

कितनी सड़क, कहां और कितनी खराब व सही का सही डाटा सरकार के सामने आएगा

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

शहर के लोगों के लिए अच्छी खबर है। अगर सर्वे सही और धरातल पर पूरा किया जाता है तो नारनौल शहर में कितनी सड़क हैं। कहां ठीक है और खराब हैं। लंबाई-चौड़ाई और कब बनी, पूरा डाटा ऑनलाइन होने जा रहा है। इसके लिए नगर परिषद ने म्हारी सड़क पोर्टल पर सर्वे अपलोड करना शुरू कर दिया है। बीते एक सप्ताह से शहर में अलग-अलग टीम सर्वे करने में जुटी है। हर सड़क का नंबर आईडी दिया जा रहा है। सर्वे पूरा होने के बाद ऑनलाइन बिना मौके पर जाए यह पता चल जाएगा कि सड़क की फिलहाल



नारनौल। एम्पलाइज कॉलोनी में सड़क को मापते सर्वे टीम सदस्य। फोटो: हरिभूमि

स्थिति कैसी है। यह भी तथ्य सामने आ जाएंगे कि शहर में ऐसी कितनी गलियां या रास्ते हैं जहां सड़क बनाने की जरूरत है। इस सर्वे के बाद सबसे बड़ा भ्रष्टाचार यह रूकेगा कि नगर परिषद के अधिकारी मिलीभगत करके ठेकेदार के मार्फत समय से पहले सड़क उखाड़कर नई नहीं बना सकेंगे। अक्सर यह चर्चा रहती है कि सड़क बिल्कुल ठीक थीं, फिर भी उखाड़कर इसे नई बना दी गई। ऐसे आरोपों से अब निजात

मिल सकती है। जानकारी के मुताबिक म्हारी सड़क पोर्टल के माध्यम से पूरे हरियाणा में सर्वे किया जा रहा है। शहर में नगर निकाय यह सर्वे कर रही है तो गांव में बीडीपीओ, मार्केट कमिटी या पीडब्ल्यूडी विभाग, जिसके कार्यक्षेत्र में जो सड़क है, वह उसका धरातल पर जाकर सर्वे करावा रही है। इसी तरह शहर की सड़कों की यथास्थिति जानने के लिए नगर परिषद ने सर्वे आरम्भ कर दिया है। हर सड़क को एक आईडी नंबर दिया जा रहा है। उसमें सड़क किस घर से किस घर तक है, उसका नाम लिखकर फीते से लंबाई-चौड़ाई मापी जा रही है। इससे नगर परिषद को यह भी पता चल जाएगा कि उसके कार्यक्षेत्र में कितनी सड़क है और उसकी कुल लंबाई चौड़ाई क्या है। भविष्य में अगर कोई सड़क निर्माण की डिमांड करता है।

आमजन के लिए यह भी जानना जरूरी

प्रदेश की सड़कों को गढ़ा मुक्त बनाने के लिए सरकार ने कदम उठाया है। इसके लिए म्हारी सड़क (हरपथ) मोबाइल एप्लिकेशन की लॉन्चिंग की गई है। इस ऐप के माध्यम से नागरिक खराब सड़कों, गड्ढों या अन्य सड़क-संबंधी समस्याओं की ऑनलाइन शिकायत दर्ज करा सकते हैं। उपयोगकर्ता अपने स्मार्टफोन से सड़क की तस्वीर और जीपीएस लोकेशन अपलोड कर सीधे सरकार तक जानकारी भेज पाएंगे। शिकायत दर्ज होते ही यह संबंधित विभाग, जैसे लोक निर्माण विभाग तक पहुंच जाएगा। इस ऐप की खासियत यह है कि यह शिकायत को जियो-टैग करता है, जिससे स्थान की सटीक जानकारी मिलती है। नागरिक अपनी शिकायत की स्थिति भी ऐप में ट्रैक कर सकते हैं।

शहर में काम कर रही 14 टीम

इस सर्वे के तहत शहर में इन दिनों 14 टीम जुटी हुई है। एक टीम में दो सदस्य हैं। करीब एक सप्ताह से यह टीम सर्वे कर रही है। इस सर्वे से पहले डिजिटल ऑनलाइन सैटलाइट से शहर का नक्शा बनाया गया है। जो सर्वे टीम है, वह उसी ऑनलाइन डाटा में धरातल पर जाकर सड़क की लंबाई चौड़ाई मापकर उस ऑनलाइन नक्शा में सर्वे आंकड़ों को फीड कर रही है।

व्या कहते हैं नए अधिकारी

नगर परिषद की एमई सोहनलाल ने बताया कि नगर परिषद म्हारी सड़क पोर्टल के तहत धरातल पर जाकर सर्वे कर रही है। शहर में ऐसी 14 टीम लगी हुई है। सैटलाइट से शहर के नक्शे से इस सर्वे के आंकड़ों को जोड़ा जा रहा है ताकि यह पता चल जाए कि शहर में कितनी सड़क है, उसकी स्थिति क्या है, वह उसी ऑनलाइन डाटा में धरातल पर जाकर सड़क की लंबाई चौड़ाई मापकर उस ऑनलाइन नक्शा में सर्वे आंकड़ों को फीड कर रही है।

गूगल प्ले स्टोर से कर सकेंगे डाउनलोड

हरपथ ऐप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर रजिस्ट्रेशन के बाद इस्तेमाल किया जा सकता है। सरकार का उद्देश्य इस नागरिक प्रतिक्रिया प्रणाली के माध्यम से सड़कों की गुणवत्ता सुधारना और जनता को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। सरकार का दावा है कि इस पहल से सड़क रखरखाव में पारदर्शिता बढ़ेगी और नागरिकों को समस्याओं के समाधान की वास्तविक स्थिति जानने में आसानी होगी।

वार्ड नंबर 12 में नगर पालिका ने चलाया अतिक्रमण हटाओ अभियान

नई सड़क पर आवागमन में बांधा बना अतिक्रमण, जेसीबी से तोड़े चबूतरे

करीब 25 लाख रुपये की लागत से वार्ड 12 में बनाई जा रही है सड़क, लोगों को मिलेगा फायदा, तारकोल की होगी सड़क



महेन्द्रगढ़। कच्चे रास्ते को उखाड़ी जेसीबी मशीन। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ►► महेन्द्रगढ़

शहर के वार्ड नंबर 12 के मौहल्ला वाल्मीकि में पूर्व पार्श्व विजय महायच के घर से रामफल के घर तक नगर पालिका टीम द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। इस दौरान जेसीबी मशीन ने रोड पर बने चबूतरे व अन्य सामग्री हटाई गई। लोगों की ओर से अभियान को लेकर कोई रोष नहीं जाताया गया। टीम ने शांतिपूर्वक तरीके से धीरे धीरे करके लोगों द्वारा रोड पर बनाए चबूतरे को हटाया गया। नगर पालिका का यह अभियान सुबह करीब साढ़े दस बजे शुरू हुआ। बता दें कि नगर पालिका शहर के वार्ड नंबर 12 में सड़क के निर्माण

अतिक्रमण हटाया गया

सड़क को चौड़ा करने को लेकर नगर पालिका की ओर से अतिक्रमण हटा दिया गया। यह सड़क काफी समय से जर्जर अवस्था में थी। निर्माण कार्य को लेकर गुणवत्ता पर विशेष फोकस रखा जाएगा, ताकि सड़क अच्छी बन सके। महेन्द्रगढ़ शहर तेजी से विकसित होगा। शहर में सड़क, साफ-सफाई, पार्क, जल निकासी इन सब पर योजनाबद्ध तरीके से काम किया जा रहा है, ताकि लोगों को किसी प्रकार की परेशानियों का सामना न करना पड़े। -रमेश सैनी, प्रधान नगर पालिका, महेन्द्रगढ़।

को सड़क करीब तीन साल से मार्ग स्टेट हाईवे को जोड़ने वाला बहाल अवस्था में पड़ी है। यह मुख्य रास्ता है। इस मार्ग से हजारों

मार्ग पर है कई दुकानें

इस मार्ग पर एक मंदिर, एक अस्पताल, स्कूल, पटवार घर सहित हजारों की संख्या में लोग रहते हैं। लोग लघु सचिवालय जाने के लिए इसी मार्ग का इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा लोग सब्जी मंडी व शहर का प्रमुख 11 हट्टा बाजार जाने के लिए इसी रोड से होकर गुजरते हैं। स्कूली विद्यार्थी व कॉलेज की छात्राएं महाविद्यालय में इसी रास्ते से जाते हैं। यह छोटा व आसान रास्ता भी है। आसपास के ग्रामीण पटवारी के पास भी इसी रास्ते से आते हैं। लोग प्रशासन से इस रोड का जल्द निर्माण करने की मांग उठा रहे थे।

की सख्या में वाहनों का आवागमन रहता है। आसपास के गांवों के ग्रामीण भी इसी रास्ते से आवागमन करते हैं। इसके अलावा स्टेट हाईवे से जोड़ने का यह मुख्य मार्ग है। रोड टूटे होने के कारण वाहन चालक भी परेशान थे। यह मार्ग करीब 2020 में बनाया गया था।

श्रीकृष्णा स्कूल में वार्षिक खेल उत्सव

खेलों में हार जीत कोई मायने नहीं रखती - डॉ. बीरसिंह यादव



महेन्द्रगढ़। विजेताओं को मेडल पहनाकर सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

श्रीकृष्णा स्कूल में वार्षिक खेल उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव, विशिष्ट अतिथि सीईओ कर्मवीर राव व चेयरपर्सन डॉ. कविता राव मुख्य रूप से उपस्थित रहे, जबकि अध्यक्षता प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा की गई। हेड संतोष यादव ने बताया कि वार्षिक खेल उत्सव में कक्षा नर्सरी से प्रथम कक्षा तक के बच्चों ने लिया। वार्षिक खेल उत्सव का मुख्यातिथि डॉ. बीरसिंह यादव द्वारा रिबन काटकर व मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर विधिवत शुभारंभ किया। सीईओ कर्मवीर राव, चेयरपर्सन डॉ. कविता राव ने सभी

बच्चों का उत्साहवर्धन किया और उनके उज्वल भविष्य की कामना की। बाधा दौड़ में कक्षा प्रथम से मिस्ट्री प्रथम, धुवी ने दूसरा व मेहलू ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। साधारण दौड़ में अवनीत कक्षा नर्सरी, दिव्यांशी, कक्षा एलकेजी से प्रियांका ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। संतुलन दौड़ में अभिनव प्रथम, नक्षा ने दूसरा, नरेन ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं रिंग रेस में तेजस्वी प्रथम, भाविका ने दूसरा व आरोही ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं मानवी, निशू व जिवांशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव ने कहा कि खेलों में हार जीत कोई मायने नहीं रखती बल्कि हारने वाले खिलाड़ी को आगे होने वाले मुकामलों में कड़ी मेहनत के साथ मेदान में उतरना चाहिए। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी समाज का निर्माता होता है तथा समाज को एक

पढ़ाई के साथ खेलकूद भी जरूरी

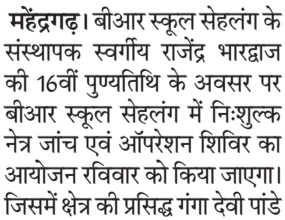
शिक्षा का एक आवश्यक अंग खेलकूद भी है तथा खेलकूद शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने का एक जरूरी हिस्सा है। चौंईओ कर्मवीर राव ने कहा कि श्रीकृष्णा गुप द्वारा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के ऊपर बल दिया जाता है। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई के साथ खेलकूद भी जरूरी है। चेयरपर्सन डॉ. कविता राव ने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ अधिक से अधिक खेलों में हिस्सा लेना चाहिए, क्योंकि खेल उन्हें उर्ध्व स्तर प्रदान करते हैं, वहीं उनके शारीरिक व मानसिक विकास में भी अहम योगदान देते हैं।

नई पहचान देता है। शिक्षा के साथ-साथ जीवन में खेलों का भी बहुत महत्व है। कार्यक्रम के अंत में चेयरमैन डा. बीरसिंह यादव, डा. कविता राव व प्राचार्य द्वारा सभी प्रतिभाशाली विजेताओं को मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया।

भारत को जनो स्पर्धा में सीएल स्कूल के विद्यार्थी द्वितीय

नारनौल। भारत विकास परिषद की ओर से आयोजित भारत को जानो प्रतियोगिता में शहर के हुडा सेक्टर स्थित सीएल पब्लिक स्कूल के छात्र यश सैनी पुत्री राजेश कुमार व धर्मांशु पुत्र सुरेश ने वरिष्ठ वर्ग जिला स्तरीय प्रतियोगिता में सामूहिक टीम के रूप में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में छात्र निशान्त पुत्र अतर सिंह व ध्रुव सैनी पुत्र मनीष सैनी ने जिला स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय, क्षेत्र व परिवार को गौरवान्वित किया। इससे पूर्व आयोजित हुई विद्यालय स्तर प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग में यश सैनी, धर्मांशु व यश सैन क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। कनिष्ठ वर्ग में निशांत, ध्रुव सैनी व धीरज क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। जिसमें प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त छात्रों को सामूहिक टीम के रूप में जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित किया गया।

बीआर स्कूल सेहलंग में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर आज



राजेंद्र भारद्वाज की 16वीं पुण्यतिथि पर कैप

कार्रवाई पुलिस ने 24 घंटे में ही दो आरोपितों को किया गिरफ्तार

पिस्तौल तानकर रूट बंद करने का दिया अल्टीमेटम, बच्चों व अभिभावक सहमें खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त

शिकायत मिलने पर पुलिस प्रशासन में मचा हड़कंप

बोलेंगे गाड़ी और खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त



नारनौल। दोनो आरोपित।

नजी स्कूल बस चालक पर बोलेंगे सवार बदमासों ने पिस्तौल तानकर सिरोही बहाली, मोहनपुर रूट बंद करने का अल्टीमेटम दिया। स्कूल आर्परेशन भी किया जाएगा। मरीजों को अस्पताल तक लाने व वापस छोड़ने की सुविधा भी विद्यालय की ओर से उपलब्ध करवाई जाएगी।

पुलिस को दी शिकायत में प्राचार्य ने बताया कि कुलतानपुर रोड़ पर स्थित एम्पलएस डीवोली स्कूल ने ग्रामीण रूटों पर बसों का प्रबंध कर रखा है। जिससे बच्चों को समय पर पहुंचना संभव हो पाता है। शिकायतकर्ता ने बताया कि 20 नवंबर की शाम स्कूल बस सिरोही बहाली, मोहनपुर, ढाणी बंधावाली, नांगल कालिया, कालबा गांव के बच्चों को लेकर रवाना हुई थी। इसी दौरान सिरोही बहाली के पास एक सफेद रंग की बोलेंगे गाड़ी ने बस का मार्ग रोक लिया तथा तीन से चार नकापोश युवक ने चालक पर पिस्तौल तान दी। परिचालक को भी

चुप रहने का अल्टीमेटम दिया। आरोपितों ने चालक को कहा कि इस रूट पर बस चलाना बंद कर दे, अन्यथा जानलेवा जोखिम पैदा कर देंगे। अल्टीमेटम देने के बाद सभी आरोपित बिना नंबर प्लेट वाली बोलेंगे गाड़ी में बैठकर भाग गए। चालक व परिचालक से वारदात की सूचना मिलने पर प्राचार्य ने पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ को शिकायत देकर आरोपितों को तत्परात पूर्ण गिरफ्तार करने के निर्देश दिए। सीआईई नारनौल के साथ संयुक्त छापेमारी टीम ने रात भर एक दर्जन से अधिक संदिग्ध ठिकानों पर दाबिश दी। इसके बाद देर रात दो आरोपितों को

खिलौनानुमा पिस्तौल व बोलेंगे जब्त

थाना इंचांज मगत सिंह ने बताया कि बस का रास्ता रोककर चालक पर पिस्तौल तानकर अल्टीमेटम देने वाले नामजद दोनो आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपितों से वारदात में इस्तेमाल की गई बोलेंगे गाड़ी व खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त की गई है। स्कूल प्राचार्य की शिकायत पर केस दर्ज करके पुलिस मामले की छानबीन में जुटी हुई है। उन्होंने बताया कि अपराधिक तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

पकड़ने में सफलता मिली है। घटना के बाद स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे तथा अभिभावकों में भय का माहौल बना हुआ है। जिस कारण शनिवार को इस रूट से अधिकांश बच्चों ने स्कूल जाना उचित नहीं समझा।





वाहनों के प्रदूषण से मुक्त माथेरान, महाराष्ट्र

टूरिस्ट प्लेसेस
शिखर चंद जैन

अगर आप शहरी भीड़-भाड़, शोरगुल और भाग-दौड़ से कुछ दिनों की छुट्टी चाहते हैं तो इस बार सर्दी की छुट्टियों में रुख करिए कुछ अल्पज्ञात मगर शांत, प्रकृति की गोद में बसे हरे-भरे विंटर डेस्टिनेशंस की ओर। यहां आपको सुकून और शांति का अहसास होगा।

हरा-भरा शीतलाखेत, उत्तराखंड: उत्तराखंड के अल्मोड़ा में स्थित शीतलाखेत एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह हिमालयी गांव अपने मनोरम कुमाऊं दृश्यों और शांत माहौल के लिए जाना जाता है। शीतलाखेत, प्रसिद्ध टूरिस्ट प्लेस रानीखेत के पास स्थित एक उभरता हुआ पर्यटन स्थल है। इस क्षेत्र में आने वाले मुख्य पर्यटक ट्रेकर्स ही होते हैं। यहां की सभी गतिविधियां पर्यावरण के अनुकूल होती हैं। शहरों के लोग वहां के प्रदूषण से दूर, एक सुकून भरी छुट्टी बिताने के लिए शीतलाखेत आते हैं।



हरा-भरा हिल स्टेशन शीतलाखेत, उत्तराखंड

कश्मीर जैसा दरिगाबाड़ी, ओडिशा: दरिगाबाड़ी, ओडिशा के पूर्वी घाट का एक हिस्सा है, जो कंधमाल जिले में स्थित है। यह राजधानी भुवनेश्वर से 251 किलोमीटर दूर है। यह हिल स्टेशन छोटी-छोटी हरी-भरी पहाड़ियों, नदियों और झरनों से भरा है। इस क्षेत्र में चीड़ और साल के पेड़ बहुतायत में हैं। यहां आपको कॉफी के बागान भी देखने को मिलेंगे। दरिगाबाड़ी को प्राकृतिक सुंदरता के कारण ओडिशा का कश्मीर कहा जाता है। यह ओडिशा के ग्रीन कूल पर्यटन स्थलों का नया चेहरा है। प्रकृति के संरक्षण के लिए यहां कई पार्क और रिजर्व बनाए गए हैं। स्थानीय समुदायों ने पर्यटकों को क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों के बारे में बताने के लिए जगह-जगह प्रकृति शिविर बनाए हैं। सर्दियों के शुरुआती महीने, दरिगाबाड़ी घूमने के लिए आदर्श समय माना जाता है।

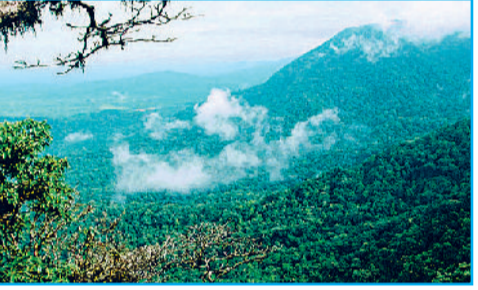
दक्षिण का चेरामुंजी अगुंबे, कर्नाटक: कर्नाटक के शिमोगा जिले में स्थित, अगुंबे एक छोटा-सा गांव है। इसे दक्षिण भारत का चेरामुंजी भी कहा जाता है। जैव विविधता से

भरपूर इस क्षेत्र में दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा वर्षा होती है और भारत में दूसरी सबसे ज्यादा वार्षिक वर्षा होती है। यह हिल स्टेशन मनोरम सुंदरता और ट्रेकिंग ट्रेल्स से भरपूर है। यह अंतिम जीवित निचले वर्षा वनों में से एक है। अगुंबे ही टीवी धारावाहिक 'मालगुडी डेज' में भारत के बेहद प्रसिद्ध काल्पनिक शहर मालगुडी का वास्तविक दृश्य था। यह मिरिस्टिका, लिस्टेसिया, गार्सिनिया, डायोस्पायरोस, यूजेनिया आदि औषधीय पौधों की कुछ दुर्लभ प्रजातियों का घर है। इसलिए इसे 'हसिर होन्नु' उपनाम मिला है, जिसका अर्थ है हरा सोना।



कश्मीर जैसी मनमोहक वादियों वाला दरिगाबाड़ी, ओडिशा

एक विशाल वर्षा वन और विविध वनस्पतियों और जीवों का घर होने के कारण, अगुंबे में अगुंबे वर्षावन अनुसंधान केंद्र स्थित है। यह भारत का सबसे पुराना मौसम केंद्र है, जो वर्षावन क्षेत्रों में होने वाले



भरपूर बारिश के लिए प्रसिद्ध अगुंबे, कर्नाटक

किसी भी बदलाव पर विशेष नजर रखता है। अगुंबे को 'कोबरा राजधानी' भी कहा जाता है क्योंकि यहां बड़ी संख्या में कोबरा पाए जाते हैं। **वाहन मुक्त माथेरान, महाराष्ट्र:** महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में पश्चिमी घाट की सहाय्री पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित माथेरान एक आकर्षक और लोकप्रिय हिल स्टेशन है। समुद्र तल से लगभग 2,625 फीट की ऊंचाई पर बसा यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के लिए जाना जाता है। माथेरान को एशिया का एकमात्र ऑटोमोबाइल मुक्त (वाहन-मुक्त) हिल स्टेशन होने का गौरव प्राप्त है, जिसका अर्थ है कि यहां किसी भी प्रकार के मोटर वाहन प्रतिबंधित हैं। यहां पर्यटक पैदल, घोड़ों पर या

किंग जॉर्ज पॉइंट अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण के लिए जाने जाते हैं। यहां मौजूद शालोट लेक एक शांत झील है, जिसके आस-पास लोग खूब पिकनिक मनाने आते हैं। माथेरान की यात्रा का मुख्य आकर्षण नेरल से माथेरान तक चलने वाली प्रसिद्ध नेरो-गेज 'टॉय ट्रेन' है। लगभग 21 किलोमीटर लंबी यह रेल यात्रा घने जंगलों और घुमावदार रास्तों से होकर गुजरती है, जो यात्रियों को एक अद्भुत और यादगार अनुभव देती है। माथेरान मुंबई से लगभग 100 किमी और पुणे से 120 किमी की दूरी पर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन नेरल है, जहां से टॉय ट्रेन या टैक्सियों द्वारा माथेरान के प्रवेश द्वार तक पहुंचा जा सकता है। प्रकृति प्रेमियों और शहर की भाग-दौड़ से दूर शांति की तलाश करने वाले पर्यटकों के लिए, माथेरान एक परफेक्ट डेस्टिनेशन है।

सबसे बड़ा नदी द्वीप माजुली, असम: माजुली, असम में ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है। माजुली और राज्य की राजधानी गुवाहाटी के बीच की दूरी 347 किलोमीटर है। यहां मौजूद ग्रामीण भारत के मनोरम दृश्य दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करते हैं। यह द्वीप एक प्रदूषण-मुक्त क्षेत्र है। माजुली द्वीप हाल ही में सुविधियों में आया था क्योंकि तेज कटाव के कारण यह डूबने की कगार पर पहुंच गया था। स्थानीय सरकार ने द्वीप पर एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है। प्राकृतिक सुंदरता के अलावा, इस द्वीप में कई सांस्कृतिक और धार्मिक इमारतें भी स्थित हैं।

चाहिए। पहले 15 से 20 दिन में लगातार सिंचाई करनी चाहिए। जनवरी से जून के बीच जब फल लगने का समय होता है, उस समय इस पेड़ को लगातार सिंचना चाहिए, नहीं तो फल सूखकर गिर जाते हैं। पेड़ के इर्द-गिर्द मलिनग करनी चाहिए ताकि नमी बनी रहे और खरपातवार न बनें। **किसानों के लिए है फायदे का सौदा:** एवोकेडो की बढ़ती मांग के कारण आज इसका बाजार मूल्य 300 से 400 रुपए प्रति किलो तक पहुंच गया है। यही कारण है कि एवोकेडो की फसल भारत में किसानों के लिए फायदेमंद 'कैश क्रॉप' रूप में उभरी है। आमतौर पर एवोकेडो का पेड़ तीन से चार साल के बीच में फल देना शुरू कर देता है। अच्छी तरह विकसित एवोकेडो का एक पेड़ औसतन 80 से 150 किलोग्राम फल हर वर्ष देता है। अगर एक एकड़ में एवोकेडो की 100 पेड़ लगा लिए जाएं तो किसान को हर साल औसतन 2 से 8 लाख रुपए की कमाई आसानी से हो सकती है।

विशिष्ट पेड़
वीना गौतम

एवोकेडो (वानस्पतिक नाम-पर्सिया अमेरिकाना) मूल रूप से मध्य अमेरिका, विशेष रूप से मैक्सिको, ग्वाटेमाला और पेरू में पाया जाने वाला पेड़ है, जो सन 1900 के आस-पास भारत में अंग्रेजों के जरिए आया था। तब से कई दशकों तक यह एक सजावटी फल के रूप में केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक तक ही सीमित रहा। 60 के दशक के बाद से लोगों ने इसके महत्व को जानना-समझना शुरू किया। अपनी न्यूट्रीशन वैल्यू के कारण एवोकेडो का फल सुपरफूड के रूप में दिनों-दिन विख्यात होता गया और इसकी डिमांड दिन-ब-दिन बढ़ती गई। **अनुकूल भौगोलिक स्थितियां:** एवोकेडो लगभग 18 से 28 डिग्री सेंटीग्रेड यानी मध्यम तापमान वाले वातावरण में अच्छी तरह फूलता-फलता है। इसलिए इसे उत्तर और मध्य भारत के ऐसे इलाकों में उगाया जा सकता है, जहां कड़ी ठंड या भीषण गर्मी नहीं पड़ती। मसलन

स्वास्थ्य-आर्थिक लाभ
दिलाए एवोकेडो का पेड़

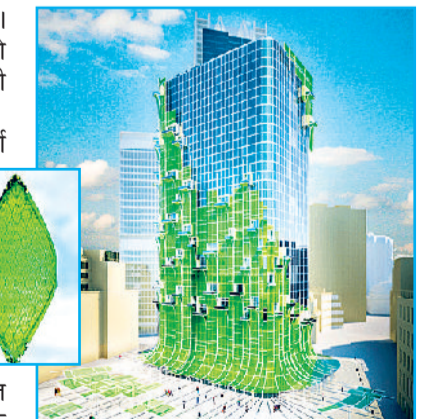


उत्तराखंड के हलद्वानी, काशीपुर, उधमसिंह नगर आदि में इसकी खेती की जा सकती है। इसके अलावा हिमाचल के निचले हिस्सों में, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में एवोकेडो की खेती की जाती है। **ध्यान रखने योग्य बातें:** एवोकेडो का पौधा फरवरी-मार्च या अगस्त-सितंबर के बीच रोपना

इंवेशन
डॉ. दीपक कोहली

आज विज्ञान और नवाचार का युग है। बदलते परिवेश में जब पूरी दुनिया ऊर्जा संकट, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है, तब वैज्ञानिक नई दिशाओं की खोज में जुटे हैं। इसी खोज की परिणति है, कृत्रिम पत्ता या आर्टिफिशियल लीफ। यह एक ऐसा आविष्कार है, जो मानव सभ्यता को स्वच्छ, सस्ती और टिकाऊ ऊर्जा प्रदान करने की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। पेड़ों के हरे पत्ते के प्रकाश की ऊर्जा को उपयोग में लाते हुए कार्बन डाइऑक्साइड और जल से भोजन बनाते हैं, तो उस प्रक्रिया को प्रकाश संश्लेषण कहा जाता है। इस प्रक्रिया में सूर्य की ऊर्जा रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। यही सिद्धांत आर्टिफिशियल लीफ का आधार बना। यह एक ऐसा उपकरण है, जो सूर्य की किरणों की सहायता से जल को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करता है। **ऐसे करता है काम:** आर्टिफिशियल लीफ या कृत्रिम पत्ते का ढांचा सामान्य पत्ते जैसा ही होता है, किंतु इसमें विशेष प्रकार के प्रकाश-संवेदी पदार्थ और उत्प्रेरक धातुएं लगाई जाती हैं, जो सूर्य की ऊर्जा को अवशोषित कर रासायनिक अभिक्रियाएं प्रारंभ करती हैं। इस प्रक्रिया में जब सूर्य का प्रकाश कृत्रिम पत्ते पर पड़ता है, तो यह जल के अणुओं को विभाजित कर देता है।

ग्रीन एनर्जी का फ्यूचर
आर्टिफिशियल लीफ



परिणामस्वरूप हाइड्रोजन और ऑक्सीजन उत्पन्न होती है। प्राप्त हाइड्रोजन को संग्रहित कर स्वच्छ ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। **विदेशी विवि में हुए प्रयोग:** सबसे पहले हावर्ड विश्वविद्यालय (अमेरिका) के वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल लीफ का सफल प्रयोग किया। उन्होंने सिलिकॉन और निकल जैसे तत्वों का उपयोग करके ऐसा उपकरण बनाया, जो साधारण सूर्य के प्रकाश में भी जल को विभाजित करने में सक्षम था। इसके बाद मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईटी), कैंब्रिज विश्वविद्यालय और

मविष्ट में ग्रीन एनर्जी उत्पादन में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है आर्टिफिशियल लीफ। इस दिशा में देश-विदेश में लगातार प्रयोग किए जा रहे हैं। इस बारे में आप भी जानिए।

टोक्यो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया। **भारत में भी हो रहे अनुसंधान:** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा कृत्रिम पत्ता विकसित किया है, जो बहुत कम सूर्य प्रकाश में भी काम कर सकता है। यह पानी से हाइड्रोजन उत्पन्न करता है। इसी प्रकार भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलूरु ने कृत्रिम पत्तों में नैनो-प्रौद्योगिकी का उपयोग कर उनका कार्यक्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उनके द्वारा विकसित कृत्रिम पत्ते पर्यावरणीय कारकों, जैसे तापमान और आर्द्रता के बावजूद स्थिर रहते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली और राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे भी इस दिशा में निरंतर कार्यरत हैं। **भविष्य के लिए उपयोगी:** आज दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती है, ऊर्जा का बढ़ता हुआ उपभोग और घटते पारंपरिक स्रोत। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे स्रोत सीमित हैं और प्रदूषण के बड़े कारण भी। इसके विपरीत, आर्टिफिशियल लीफ सूर्य की असीम ऊर्जा का उपयोग करती है, जो निःशुल्क और अनंत है। यदि इस तकनीक का बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपयोग संभव हो सका, तो आने वाले समय में घर स्वयं अपनी ऊर्जा उत्पन्न कर सकेगा।

सिने ट्रेड
मनोज प्रकाश

अधिकांश फूल अपने-आप में इतने सुंदर-मोहक होते हैं कि उन्हें देखकर मन प्रफुल्लित हो उठता है। उस पर जब कोई फिल्म अभिनेत्री अपने बालों में कोई फूल या फूलों का गजरा लगा ले तो उनकी खूबसूरती में मानो चार चांद लग जाते हैं। नरगिस से लेकर नरगिस फाखरी तक, हेलन से हेमा मालिनी तक, रेखा से राखी तक, मीना कुमारी से मुमताज तक, शर्मिला टैगोर से शिल्पा शेट्टी तक, माला सिन्हा से माधुरी दीक्षित तक। चाहे किसी भी पीढ़ी की अभिनेत्री रही हों, सभी ने अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए फूलों को न सिर्फ अपने बालों में लगाया बल्कि उनकी रंगत इस तरह बिखेरी कि हर दौर में दर्शक उनके जलवों के कायल होते रहे हैं। फिल्म निर्माता-निदेशकों के लिए फूल सदियों से प्रेरणा का सबब रहे हैं। हर रंग, हर तरह के फूल फिल्मी दृश्यों की सुंदरता, नजाकत और काव्यात्मकता को बढ़ा देते हैं। **फूलों से बढ़ती है दृश्यों की खूबसूरती:** फिल्मी दृश्यों में अगर फूलों के बाग हों, तो नायक-नायिका की रोमांटिक उपस्थिति इनसे और बढ़ जाती है। गीत या फिर किसी दृश्य में अगर फूल नजर आते हैं, तो उनकी सुंदरता कई गुना बढ़ जाती है। इसके एक नहीं कई उदाहरण हैं। राखी और शशि कपूर पर फिल्माए गए गीत 'ओ मेरी शर्मीली' (शर्मीली) में गुलाब की रौनक है, तो शर्मिला टैगोर-राजेश खन्ना पर फिल्माए गए गीत 'कोरा काज थ य म न मेरा' (आराधना) की ओर भी रोमांटिक किया है डहेलिया के फूलों ने। एवरग्रीन गीत 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू' (आराधना) में लगे फूल खन्ना, सुजीत कुमार जब चलती ट्रेन में बैठी शर्मिला टैगोर को छेड़ते हैं, तो शर्मिला के बालों में लगे छोटे-छोटे लाल फूल सारे माहौल को रंगीन कर देते हैं। दरअसल, फूल कोई भी हो, अगर उसे करीने से लगाया और प्रस्तुत किया जाए तो वह नायिका की खूबसूरती और गीतों-दृश्यों की रूमानीयत को और भी बढ़ा देता है। **मुमताज का यूनीक गजरा-स्टाइल:** मुमताज ऐसी अभिनेत्री रही हैं, जो अपनी स्टायलिंग के कारण आज भी युवा पीढ़ी के लिए फैशन आइकन हैं। राजेश खन्ना-मुमताज की फिल्म 'अपना देश' के गीत 'कजरा लगा के, गजरा सजा के बिजुरी गिरा के जइयो न' में मुमताज ने जिस तरह से बेला के फूलों से बना गजरा

जलेबी बहुत लोकप्रिय मिठाई है, जो देश के कई इलाकों में खूब पसंद की जाती है। लेकिन इससे कई गुना बड़ा और भारी जलेबा कुछ ही स्थानों पर मिलता है। जलेबी और उसके बड़े भाई जलेबा से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

रसभरी जलेबी का बड़ा भाई जलेबा

रोचक
अभिव्यक्ति त्रिवेदी

जलेबी तो आप सभी ने जरूर खाई होगी। बाहर से कुरकुरी और भीतर से रसभरी जलेबी भला किसे पसंद नहीं होगी। लेकिन क्या आप जानते हैं जलेबी का एक भाई भी है, जिसे कहते हैं जलेबा।



पहले बात जलेबी की: जलेबी हर वर्ग के लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय व्यंजन है। स्वाद में मीठी, कुंडलाकार जलेबी भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, ईरान के साथ लगभग सभी अरब देशों में खाई जाती है। जलेबी के इतिहास की बात करें तो इसकी शुरुआत किसी इस्लामिक देश से मानी जाती है। मध्यकालीन किताब 'किताब-अल-तबीक' में भी 'जलाबिया' नामक मिठाई का उल्लेख मिलता है, जो अरबीक शब्द है। फारसी में इसे 'जलिबिया' कहते हैं। 10वीं शताब्दी की अरबीक पाक कला किताब में भी 'जुलुबिया' बनाने की कई रेसिपीज का उल्लेख मिलता है। इतिहासकारों की मानें तो जलेबी 500 साल पहले, जब तुर्की आक्रमणकारी

गुजरात में 'जलेबी-फाफड़ा' नाश्ते के तौर पर बहुत प्रचलित है। भारत की तरह ही, पाकिस्तान, बांग्लादेश, ईरान और कई अरब देशों में भी जलेबी को बहुत पसंद किया जाता है। **ऐसे बनाते-खाते हैं जलेबी:** जलेबी बनाने में मैदा, यीस्ट यानी खमीर, घी या तेल, शक्कर और पानी का इस्तेमाल किया जाता है। इनके अलावा पनीर जलेबी, आलू की जलेबी, मावा-खोया जलेबी आदि कई प्रकार की जलेबियां मार्केट में उपलब्ध हैं। कई शहरों में इसे पोहा-जलेबी, रबड़ी जलेबी, दूध-जलेबी आदि कई तरह से खाया जाता है।

भारत आए थे, हिंदुस्तान में पहुंची थी। जुलुबिया, जो अब जलेबी के नाम से जानी जाती है, एक मिठाई है। इसे मूल रूप से ईरान में इसी नाम से जाना जाता था। यह मध्यकाल में तुर्की और फारसी व्यापारियों के साथ भारत आई और धीरे-धीरे भारत में एक लोकप्रिय मिठाई बन गई। 10वीं शताब्दी के एक अरबी ग्रंथ में भी इस मिठाई का उल्लेख है, जिसमें इसे 'जलाबिया' कहा गया है। **कई नाम हैं प्रचलित:** श्रीलंका में इसे 'पानी वलालु' कहते हैं, जो उड़द और चावल के आटे से बनती है। भारत के उत्तर-पश्चिम में इसे जलेबी, महाराष्ट्र में जिलबी तथा बंगाल और बांग्लादेश में 'जिलपी' कहा जाता है। ईरान के अलावा ट्यूनीशिया में इसे 'जल्बिया' के नाम से जाना जाता है, वहीं नेपाल में इसे 'जेरी' कहते हैं। **कई रूपों में प्रसिद्ध:** भारत के लगभग हर कोने में जलेबी बहुत लोकप्रिय है, लेकिन यह उत्तर भारत, पश्चिम बंगाल और बिहार में विशेष रूप से पसंद की जाती है। मध्य प्रदेश के जबलपुर में 'खोया जलेबी' प्रसिद्ध है तो आंध्र प्रदेश के तेनाली में गुड़ की जलेबी लोकप्रिय है, जिसे 'वेल्लम जिलेबी' कहा जाता है।



लाजवाब होता है जलेबा: अपने देश में कुछ जगहों पर और ख़ास अवसरों पर बड़े आकार की जलेबी, जिसे जलेबा कहते हैं, बहुत लोकप्रिय है। जलेबी और जलेबा में मुख्य अंतर उनके आकार और गाढ़ापन का होता है। एक जलेबा करीब 250 ग्राम वजन का हो सकता है। जलेबा एक सामान्य जलेबी का विशाल और मोटा संस्करण यानी 'किंग साइज' संस्करण होता है, जिसका हर टुकड़ा काफी बड़ा होता है। इसे पकने और चाशनी में पूरी तरह भीगने के लिए ज्यादा समय तक तला जाता है, जबकि जलेबी पतली और कुरकुरी होती है। **कुछ ही जगह मिलता है जलेबा:** जलेबा कुछ ही जगहों पर मिलता है। भारत की धार्मिक राजधानी बनारस में भादो महीने में रतजगा पर्व के अवसर पर जलेबा मिलता है। वहां के भरतपुर, झंझोर, उदार, बरवा सहित कई गांवों में जलेबा की दुकानों पर शाम होते ही भीड़ लग जाती है। इसके अलावा दीपावली के अवसर पर पुरानी दिल्ली के कुछ इलाकों में, हरियाणा के मेवात में भी जलेबा बनाया और चाव से खाया जाता है।

फूल अपनी खूबसूरती, सुगंध और मोहकता के लिए जाने जाते हैं। हिंदी फिल्मों में भी फूलों ने नायिकाओं की खूबसूरती में चार चांद लगाने में बड़ी भूमिका निभाई है। साथ ही फिल्मी गीतों और सीस को रूमानी बनाने में भी फूलों का अहम रोल रहा है। हिंदी फिल्मों और फूलों के कनेक्शन पर एक नजर।

फूलों से खूब निखरती रही है फिल्मी एक्ट्रेसेस की खूबसूरती



'हरियाली और रास्ता' में माला सिन्हा-मनोज कुमार 'आराधना' में शर्मिला टैगोर के साथ राजेश खन्ना की खूबसूरती और उनकी उपस्थिति को फूलों ने और भी सुंदर-मोहक बना दिया। फिल्म 'हरियाली और रास्ता' में मनोज कुमार और माला सिन्हा पर फिल्माया गया गीत 'बोल मेरी तकदीर में क्या है' में माला सिन्हा ने अपने बालों को गुलदाउदी से इस प्रकार से सजाया है कि उनकी मंद-मंद मुस्कान की मोहकता और भी बढ़ गई। आगे चलकर साल 1992 में रिलीज फिल्म 'तहल्ला' के 'दिल दीवाने का डोला दिलदार के लिए' में अभिनेत्री ने अपनी पूरी चोटी को फूलों में गुंथकर ऐसा स्टायल बनाया कि सालों तक यह फैशन शायदियों में दुल्हन के सिर चढ़कर बोला। **फूलों वाले ये सदाबहार गीत:** बात फिल्म और फूलों की चली है तो यहां एक और बात का जिक्र करना जरूरी हो जाता है। हिंदी फिल्मों में जहां एक ओर अभिनेत्रियों ने अपनी हेयर स्टायलिंग के लिए फूलों का प्रयोग किया, तो शायरों/गीतकारों ने अपने गीतों में फूलों का खूब और बखूबी इस्तेमाल किया, कभी सीधे-सीधे तो कभी प्रतीक के रूप में। 'आरजू' फिल्म का गीत 'ऐ फूलों की रानी बहारों की मलिका', 'सुरज' का गीत 'बहारों फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है', 'सरस्वती चंद्र' का 'फूल तुम्हें भेजा है खत में', 'प्रेम पुजारी' का 'फूलों के रंग से' जैसे तमाम ऐसे गीत हैं, जो आज भी महफिलों में बजते हैं। सोशल मीडिया के दौर में भी इन सदाबहार गीतों पर खूब वीडियोज बनाए जाते हैं और समय-समय पर ये गाने ट्रेंड भी करते हैं।

साथ कोरस गाने वाली साइड आर्टिस्ट्स ने भी बालों में फूल लगाए हैं। पूरे गीत में बालों में लगे फूलों से जो समा बंधा है, वह देखते ही बनता है। 1973 में आई फिल्म 'लोफर' में फरीदा जलाल की शादी में लाल शरारा कुर्ते पर बालों में गजरा लगाकर मुमताज ने बला दिया कि अगर फूलों का गजरा लगाया हो, तो स्टायल क्या होगा। इसी फिल्म के सुपरहिट गीत 'मैं तेरे इश्क में मर न जाऊं कहीं' में उन्होंने फूलों के फ्रिट से सजी साड़ी पर सफेद गुलदाउदी लगाकर दर्शकों को अपना दीवाना बना लिया था। **फूलों से निखरी इनकी भी खूबसूरती:** 'आज मैं जवान हो गई हूँ' (मैं सुंदर हूँ) गीत में लीना चंदावरकर, 'पल-पल दिल के पास कोई रहता है' (ब्लैकमेल) में राखी



'शर्मीली' के एक गीत में राखी-शशि कपूर